# Unnati International Journal of Multidisciplinary Scientific Research

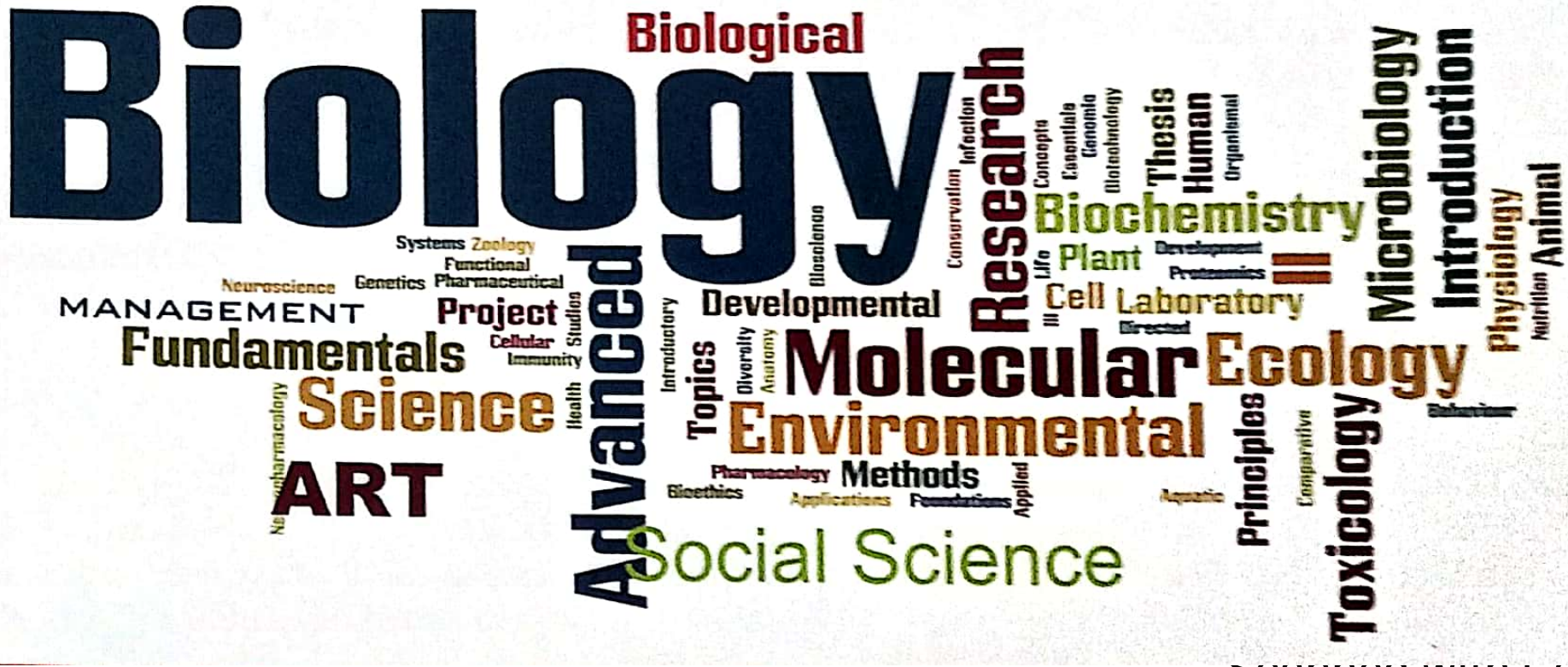


Scanned with CamScanner

# CONTENTS


| S. No. | Paper Title | Author Name | Page No. |
|---|---|---|---|
| 1 | चतुर पंडित जी का भिन्न-भिन्न कलाकारों से सम्बंध स्थापित कर बंदिशों का संकलन करना | अंजली कनौजिया | 1-3 |
| 2 | मानव मूल्यों का ह्रास एक सामाजिक समस्या | डॉ. रविदास अहिरवार | 4-8 |
| 3 | शाजापुर जिले में महिला उद्यमिता विकास में शासकीय योजनाएँ एवं गैर सरकारी संगठनों का योगदान | डॉ. जगदीश प्रसाद कुल्मी | 9-15 |
| 4 | आवागमन के साधनों का विकास बैगा जनजातियों का प्रवास (मण्डला जिले के विशेष संदर्भ में) | डॉ. ज्योति सिंह | 16-19 |
| 5 | शैक्षिक वेब रेडियो : ज्ञान धारा, इग्नू के संदर्भ में | हृदेश श्रीवास्तव | 20-23 |
| 6 | भारत में चुनाव का महत्व | डॉ. जयश्री दीक्षित<br>अभिजीत सिंह | 24-25 |
| 7 | बैंकों द्वारा अनुसूचित जनजाति वर्ग को रोजगार हेतु विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत प्रदत्त ऋण का प्रभाव : एक अध्ययन | ज्योति डावर | 26-33 |
| 8 | बैतूल जिले की चिचोली विकासखण्ड के बारे में सामान्य जानकारी | डॉ. सुधीर शर्मा<br>कु. कल्पना बिसन्दे | 34-37 |
| 9 | सविनय अवज्ञा आंदोलन एवं आदिवासी मंडला में जंगल सत्याग्रह | मनोज कुमार कुशवाहा | 38-39 |
| 10 | योगेश्वर मत्स्येन्द्रनाथ | नाजिया सिद्दीकी | 40-41 |
| 11 | कृषि विपणन की सैद्धान्तिक अवधारणाएँ | डॉ. शिवेन्द्र शर्मा | 42-44 |
| 12 | योग ग्रँथों में वर्णित अस्थमा रोग का-एक सैद्धान्तिक अध्ययन | डॉ. मनोज कुमार शर्मा<br>सुदर्शन देव आर्य | 45-49 |
| 13 | पंचायती राज संस्थायें और महिला सशक्तिकरण | विधानन्द सिंह | 50-53 |
| 14 | माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना | मनीषा पटेल<br>डॉ. अरुण मिश्र | 54-55 |
| 15 | हिन्दी में विशेषीकृत पत्रकारिता – सहकारी मीडिया और डिजीटलीकरण | नीलमेघ चतुर्वेदी<br>प्रो. प्रभुनारायण मिश्र | 56-59 |
| 16 | योग जीवन में सात्विक्ता की सार्थकता | डॉ. लालजीत पचौरी | 60-62 |
| 17 | निःशक्त व्यक्तियों हेतु छूट एवं सुविधाएँ : राज्य स्तर पर | अपर्णा श्रीवास्तव | 63-67 |
| 18 | समावेशी शिक्षा में समावेशन के लिए पाठ्यक्रम अनुकूलन एवं अनुदेशन अनुकूलन की महत्ता | डॉ. शकीला खान | 68-71 |


Scanned with CamScanner

Unnati International Journal of Multidisciplinary Scientific Research, U.I.J.M.S.R.
Peer Reviewed - Refereed Journal & Impact factor - 3.2, Open Access, Double Blind, Monthly Online Journal
ISSN : 2581-8872, Vol. : 1, No. : 1 Feb. - 2019 | 2019

# समावेशी शिक्षा में समावेशन के लिए पाठ्यक्रम अनुकूलन एवं अनुदेशन अनुकूलन की महत्ता

**डॉ. शकीला खान**
अतिथि विद्वान, शिक्षा संकाय, डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

समावेशी शिक्षा एक आधुनिक शिक्षा प्रणाली है, समावेशी शिक्षा का अभिप्राय ऐसी शिक्षा प्रणाली से है जिसमें सभी छात्रों को बिना किसी भेदभाव के सीखने–सिखाने के समान अवसर मिले। समावेशी शिक्षा का उद्देश्य सभी प्रकार बालकों को एक समान शैक्षिक अवसर प्रदान करना हैं ताकि बालक आत्मनिर्भर होकर मुख्यधारा में शामिल हो सके। समावेशी शिक्षा में प्रत्येक बालक को चाहे वो विशिष्ट हो या सामान्य, बिना किसी भेदभाव के एक साथ, एक ही विद्यालय में सभी आवश्यक तकनीकों व सामग्रियों के साथ उनको सीखने–सिखाने की जरूरतों को पूरा किया जाये और उनके साथ हर तरीके से सामंजस्य स्थापित किया जाये।

**सामंजस्य/अनुकूलन का अर्थ :–** छात्रों के सीखने के वातावरण को बढ़ावा देने के लिए संशोधित करने का उपागम ही सामंजस्य/अनुकूलन है। विशेष शैक्षिक आवश्यकता वाले बच्चों के लिए किया गया समायोजन जो उनके समान अवसरों की संभावनाओं को बढ़ाता है, सामंजस्य कहलाता है। अपने को प्रत्येक परिस्थितियों में ढालकर समावेशन ही अनुकूलन है। उचित सामंजस्य कक्षा व्यवस्था, गतिविधि के प्रकारों या समान अवसरों की सुविधा में सुधार करके बनाया जा सकता है। स्कूलों से उम्मीद की जाती है कि स्कूली वातावरण में उन बाधक तत्वों को बदले ताकि विकलांग छात्र की विभिन्नता को समायोजित किया जा सके।

पाठ्यक्रम और निर्देशात्मक सुधार, कार्यात्मक, आयु अनुसार और बदलाव को प्रतिबंधित करने वाले होने चाहिए, कक्षा शिक्षक को यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि शिक्षण सामग्री, समावेशी शिक्षा कार्यक्रम के अनुरूप होनी चाहिए, विशेष शैक्षिक आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की अधिकतम वृद्धि और विकास के लिए उनकी आवश्यकता और स्तर के अनुसार उनको कम से कम प्रतिबंधात्मक अर्थात् बाधा रहित पहुँच प्रदान की जाए। समावेशन की अवधारणा में शामिल विशेष शैक्षिक बालकों के लिए अनुकूलन के निम्न प्रकारों को शामिल किया गया है– (1) पाठ्यक्रम अनुकूलन (2) निर्देशात्मक अनुकूलन।

**(1) पाठ्यक्रम अनुकूलन से आशय :–** समावेशी शिक्षा की धारणा के अनुसार विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले छात्रों की विशेष आवश्यकता को समझकर उन्हें सामान्य बच्चों की अवस्था को ढालने का प्रयास किया जाता है इसके लिए पाठ्यक्रम का भी बालकेन्द्रित होना आवश्यक है जिससे असामान्य बच्चे सामान्य परिस्थितियों में शिक्षा को ग्रहण कर सके अर्थात् विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को उनकी प्रकृति की परवाह किए बिना शिक्षा के समान अवसर प्रदान करना पाठ्यक्रम अनुकूलन में समाविष्ट है। पाठ्यक्रम आधारित रणनीतियों द्वारा एवं पाठ्यक्रम से संबंधित कुछ संशोधनों द्वारा हम समावेशन को सफल बनाते हैं।

समावेशी शिक्षा को व्यापक शिक्षण रणनीतियों की आवश्यकता है जो कि छात्रों को सभी विद्यार्थियों के ज्ञान के अन्तर, अधिगम शैलियों, खूबियों और कमियों को पहचानने में समर्थ बनाती है। समावेशी शिक्षा को पारस्परिक पाठ्यक्रम की सहायता से प्रदान नहीं की जा सकती क्योंकि यह विशेष बालकों की जरूरतों को पूरा नहीं करती इसलिए पाठ्यक्रम में सुधार की आवश्यकता है।

**पाठ्यक्रम में सुधार के लिए मानक उपाय :–**

**1. सरल पाठ्यक्रम (Simple curriculum) –** मानसिक रूप से विकलांग बालकों के लिए पाठ्यक्रम सरल होना चाहिए। ऐसे बालकों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए पाठ सिखाने की अपेक्षा शारीरिक व व्यावसायिक प्रशिक्षण पर बल देना चाहिए। उनको शारीरिक कौशल सिखाना चाहिए ताकि वह अपनी जिन्दगी में स्वतंत्र हो सके।

**2. लचीला पाठ्यक्रम (Flexible curriculum) –** विद्यालयों में विभिन्न क्षमताओं वाले बालकों को एक ही कक्षा में पढ़ाना चुनौती भरा कार्य है इसलिए समावेशी शिक्षा की सफलता के लिए SEN विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम में लचीलापन होना चाहिए।



Email Id : info@isrs.in, ncrd2016@gmail.com , Website : www.isrs.in, Mob. : 9993332299

Scanned with CamScanner